रमेश शर्मा

मुम्बई

अ से आदि अनपढ़ पढे,अंतिम ज्ञ से ज्ञान ।
माला हिंदी वर्ण की,..... यूँ ही नही महान ।।

देख सितम्बर मास की , है चौदह तारीख ।
देंगे सारे आज फिर, ..हिंदी तुझको सीख ।।

हिंदी मेरे देश की,.... मोहक मधुर जुबान ।
इसका होना चाहिए, और अधिक उत्थान ।।

किया उन्होंने आज फिर, हिंदी पर अहसान ।
दिया साल के बाद फिर, हिंदी में व्याख्यान ।।

भावी पीढ़ी पर अगर, दिया नहीं जो ध्यान ।
हो जाएगी सत्य यह,.... हिंदी से अनजान ।।

हिंदी का समझें बड़ा, खुद को खिदमतगार ।
बच्चे जिनके पढ़ रहे, अँग्रेजी अखबार ।।

अँग्रेजी में लिख रहे, हिन्दी का अनुवाद ।
संसद में भरपूर है ,.ऐसों की तादाद ।।

होती हिंदुस्तान की,.....हिंदी से पहचान ।
इसका होना चाहिए, सबको ही अभिमान ।।

हिंदी का आदर करे ,..पढें नये नित छंद ।
होगी सबकी एक दिन,हिंदी प्रथम पसंद ।।

हिंदी भाषा देश की,.....जिसकी नही मिसाल ।
समय समय पर विश्व मे,जिसने किया कमाल ।।

फिल्मो का भी हाथ है ,इसमे बडा रमेश ।
हिंदी को पहचानते, इसकारण सब देश ।।

शशिलता पाण्डेय

उत्तर प्रदेश

हुआ खामोश सूरज चाँद कुछ कहने लगा,
सूर्यप्रभा धूमिल आशुतोष अस्ताँचल चला

सहस्त्रकिरण समेटे चली निज प्रचंड प्रभा,
रवि शनैं-शनैं विश्रांति-गृह की ओर चला।

तम् तरुओट क्षितिज छिटकी सिंदूरी आभा,
परिलक्षित व्योम-भाल पर धुंधली शशिकला।

अब गगन पर लगेगी चाँद-सितारों की सभा,
कलांत मार्तण्ड निशा-आलिंगन में छुपने चला।

लौटते वापस झुंड में खग-विहग निज नीड़ में,
झुंड में गोधूलि उड़ाती गौएँ लौटी गौशाला।

विकल चाँद चमकने को सितारों की भीड़ में,
हुए पतित धूल-धूसरित पीत-पल्लव गंदला।

मुरझाई प्रभात की खिली कुसुम-कलियां,
मार्तण्ड प्रचंड विरह में निशा मिलन को मचला।

सुगन्धि धूप-दीप की ध्वनित देवालय- घंटियां,
अब सुनहरी शाम को पूजा का दीपक जला।

बिखरी वातावरण भोज्य-पदार्थ की सुगन्धियां,
सुबह चमकता सूरज सुनहरी शाम को ढला।

सुहागवती रजनी के आँचल अंशुमान खो गया,
सदियों से ये प्रकृति के परिवर्तन का सिलसिला।

सूर्योदय प्रखर किरणे शाम गहरी रात का साया,
मानव-जीवन की कहानी भी इसी रीत पर ढला।